उपसंहार

तुलनात्मक अध्ययन के क्रम में मोहन राकेश और गिरीश करनाड के जीवन के कई पहलू सामने आए हैं। विनम्रता, भावुकता, मित्रों के प्रति आत्मीयता जैसे सुकोमल भाव इन दोनों नाटककारों के जीवन एवं व्यक्तित्व की पहचान रहे हैं। मोहन राकेश का साहित्य से लगाव बचपन से ही रहा है। इन्होंने हिंदी साहित्य की जिस किसी विधा में लिखा, चाहे वह नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध या यात्रा वृतांत हों, सभी में उनका व्यक्तित्व, उनका जीवन संघर्ष नजर आता है। वहीं बहुमुखी प्रतिभा के धनी गिरीश करनाड नाट्य-लेखन, फिल्म निर्माता और सिनेमा तथा दूरदर्शन में अभिनय के क्षेत्र में उतरे तो इनके अभिनय से वह किरदार जीवंत हो गया, साथ ही इन्होंने अपने नाटकों में पौराणिक पात्रों के माध्यम से भारतीय चिंतनधारा को आधुनिक सन्दर्भ में उभारा है।

तुलनात्मक अध्ययन करते हुए देखा गया कि `आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटक में वह सभी तत्त्व हैं जो इन नाटकों में आधुनिकता लाते हैं। दो अलग-अलग वातावरण के होते हुए भी यह दोनों नाटक आधुनिक समाज की आर्थिक, मानसिक स्थिति से उत्पन्न मनुष्य के द्वंद्व को व्यक्त करते हैं। पाठकों, दर्शकों से तारतम्य बाँध सके, जिसके लिए नाटक की भाषा बहुत ही सरल, मुहावरेदार रूप में नाटककारों ने रखा है।

इन दोनों ही नाटककारों का प्रिय विषय स्त्री-पुरुष सम्बन्ध रहा है। `आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटक भी इसी विषय पर आधारित हैं। कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं होता उसमें कोई न कोई अपूर्णता रहती ही है। यह दोनों नाटक मनुष्य की इसी पूर्णता और अपूर्णता के मध्य घूमते हुए नजर आते हैं। इन दोनों ही नाटकों के पात्र अपनी अपूर्णता से त्रस्त हैं और पूर्णता की तलाश में भटकते रहे हैं। इनका यही भटकाव इनके अंतर्मन में द्वंद्व उत्पन्न करता है।

पूर्ण पुरुष को प्राप्त करने की कामना एक स्त्री की सदैव रही है। इन दोनों नाटकों द्वारा भी इसी कमाना को दर्शाया गया है। विवाह के उपरांत जब इन दोनों नाटकों की स्त्री पात्रों को अपने पति की अपूर्णता का आभास होता है तो यह दोनों स्त्री पात्र पूर्ण पुरुष की तलाश में निकल जाती हैं। पति की अपूर्णता के कारण यह दोनों स्त्री पात्र पूर्ण पुरुष की तलाश में कई पुरुषों के संपर्क में आती हैं, किन्तु यहाँ भी उन्हें अपूर्णता ही मिलती है।

यह दोनों ही नाटक विवाह जैसे सामाजिक बंधनों पर एक प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। विवाह के उपरांत स्त्री को कोई स्वतंत्रता नहीं है कि वह किसी अन्य पुरुष के साथ सम्बन्ध बना सके। इसी प्रकार के गंभीर प्रश्नों को इन दोनों

नाटककारों ने अपने-अपने नाटकों में उठाया है। इन नाटकों में यह कहीं नजर नहीं आता कि पुरुष अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य स्त्री के प्रति विवाह के उपरांत आकर्षित हुआ हो।

यह दोनों नाटक स्त्री की महत्वाकांक्षा को प्रदर्शित करते हैं। इन दोनों नाटकों की स्त्री पात्र एक साथ बहुत कुछ पा लेने की महत्वाकांक्षा लिए हुए भटकती नजर आती हैं। नाटककारों ने अपने-अपने नाटकों में कभी न तृप्त होने वाली तृष्णा रूप में स्त्री पात्र को प्रस्तुत किया है। इन नाटकों में स्त्री पात्रों की यह तृष्णा परिवार के बिखराव और विघटन का कारण बनती है। `आधे अधूरे` नाटक की सावित्री को अंततः घर लौटना पड़ता है, किन्तु `हयवदन` नाटक की पद्मिनी को देवदत्त और कपिल की मृत्यु के उपरांत सती होना पड़ता है। इस प्रक्रिया में दोनों ही नाटकों के परिवार टूट से जाते हैं।

इन नाटकों के नाटककार एक परिवार, एक घर के विघटन का कारण ढूँढते नजर आए हैं। वह क्या कारण है जिससे एक परिवार और उसका घर बिखर जाता है? वह क्या कारण है जिससे किसी परिवार का विघटन हो जाता है? इसी क्रम में नाटककारों ने पाया कि एक परिवार, एक घर के विघटन के पीछे जो कारण है वह एक स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध के मध्य में किसी तीसरे का प्रवेश करना रहा है जैसे- महेन्द्रनाथ और सावित्री के बीच में सावित्री का अन्य पुरुषों से सम्बन्ध रखना रहा है और वहीं `हयवदन` नाटक में देवदत्त और पद्मिनी के बीच कपिल का प्रवेश करना रहा है। इन दोनों नाटकों के द्वारा नाटककारों ने यही दर्शाने का प्रयास किया है।

गिरीश करनाड द्वारा रचित `हयवदन` नाटक मूलतः कन्नड़ भाषा का नाटक है। कर्नाटक की लोक-नाट्य शैली यक्षगान और कथकली का प्रयोग `हयवदन` नाटक में हुआ है। इस नाटक का कथानक संस्कृत के `कथा सरित्सागर` की एक लोक-कथा बेताल पच्चीसी और जर्मनी के एक लेखक थॉमस मान का लघु-उपन्यास `ट्रांसपोज्ड हेड्स` पर आधारित है। कथा और उपन्यास के बाद इसे नाटक के रूप में प्रस्तुत कर पाना सहज नहीं लगता पर यह गिरीश करनाड का नाट्य चिंतन ही है जो इसे नाट्य रूप प्रदान कर सका है। `हयवदन` की उपकथा को जोड़कर गिरीश करनाड ने इस नाटक को उपर्युक्त दोनों (बेताल पच्चीसी और ट्रांसपोज्ड हेड्स) से भिन्न रखा है। जिससे की गिरीश करनाड का नाट्य चिंतन नजर आता है।

नाटककारों की रंग-दृष्टि बहुत सशक्त रही है। जिसका प्रमाण यही है कि यह दोनों ही नाटक अपने-अपने क्षेत्र से निकलकर अखिल भारतीय रंगमंच तक पहुंचे हैं। अखिल भारतीय रंगमंच को उभारने का श्रेय भी इन्हीं दोनों नाटककारों को जाता है। इन दोनों नाटकों को रंगमंच पर बहुत सफलता मिली है साथ ही देश के बहुत से प्रतिष्ठित

रंग-निर्देशकों ने इसका मंचन भी किया है। `आधे अधूरे` नाटक का प्रथम निर्देशन श्री ओम शिवपुरी ने किया है और `हयवदन` नाटक का प्रथम निर्देशन बी. वी. कारंत द्वारा हुआ है।

तुलनात्मक अध्ययन के क्रम में `आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटक विषय की दृष्टि से तो समानता लिए हुए हैं किन्तु नाट्य-शिल्प की दृष्टि से भिन्नता लिए हुए हैं। `आधे अधूरे` नाटक आधुनिक परिवेश पर आधारित है और `हयवदन` लोक-नाट्य परंपरा शैली पर आधारित नाटक है। लोक-नाट्य शैली का प्रयोग हुआ है पर इसका विषय आधुनिक है। मोहन राकेश और गिरीश करनाड के ये नाटक अपने पीछे कई प्रश्न छोड़कर जाते हैं- जैसे स्त्री-पुरुष संबंधों की त्रासदी, स्त्री-मुक्ति की कामना, विवाह के उपरांत परपुरुष सम्बन्ध, पारिवारिक विघटन, मानसिक द्वंद्व आदि ये वह प्रश्न हैं जिनका उत्तर समयानुसार परिवर्तित होते रहे हैं और होते भी रहेंगे।

रंगमंचीय दृष्टि से ये दोनों नाटक वे नाटक हैं जो अखिल भारतीय रंगमंच को एक फलक पर पहुंचा देते हैं। मोहन राकेश और गिरीश करनाड की रंग-दृष्टि भारतीय रंगमंच को विकसित करने की रही है। मोहन राकेश भारतीय रंगमंच को पश्चिमी रंगमंच की साज-सज्जा से मुक्त रखने के पक्ष में रहे हैं, उनका रंगमंचीय दृष्टिकोण यह रहा है कि भारतीय रंगमंच को सादगी और प्रतीकात्मक रूप में रखें। जिसका समर्थन गिरीश करनाड ने भी किया। `आधे अधूरे` और `हयवदन` नाटकों में उन्हीं उपकरणों का प्रयोग हुआ है जो इन नाटकों को पश्चिम की भव्यता से मुक्त रखते हैं। इन दोनों नाटकों में इनकी भाषा-शैली पर भी ध्यान दिया गया है, मुख्य रूप से `हयवदन` नाटक की भाषा-शैली पर। `हयवदन` नाटक मूल रूप से कन्नड़ भाषा का नाटक है जिसका अनुवाद हिंदी भाषा में हुआ है। हिंदी भाषा में अनूदित होने के उपरांत भी `हयवदन` नाटक अपनी मौलिकता और रंगमंचीयता को बनाए हुए है।